

Subject:- EEDM

Water Cycle (जल चक्र)

* जल समुद्र, तालाबों तथा नदियों के रूप में पृथ्वी की सतह के लगभग 73% भाग से घिरा हुआ है।

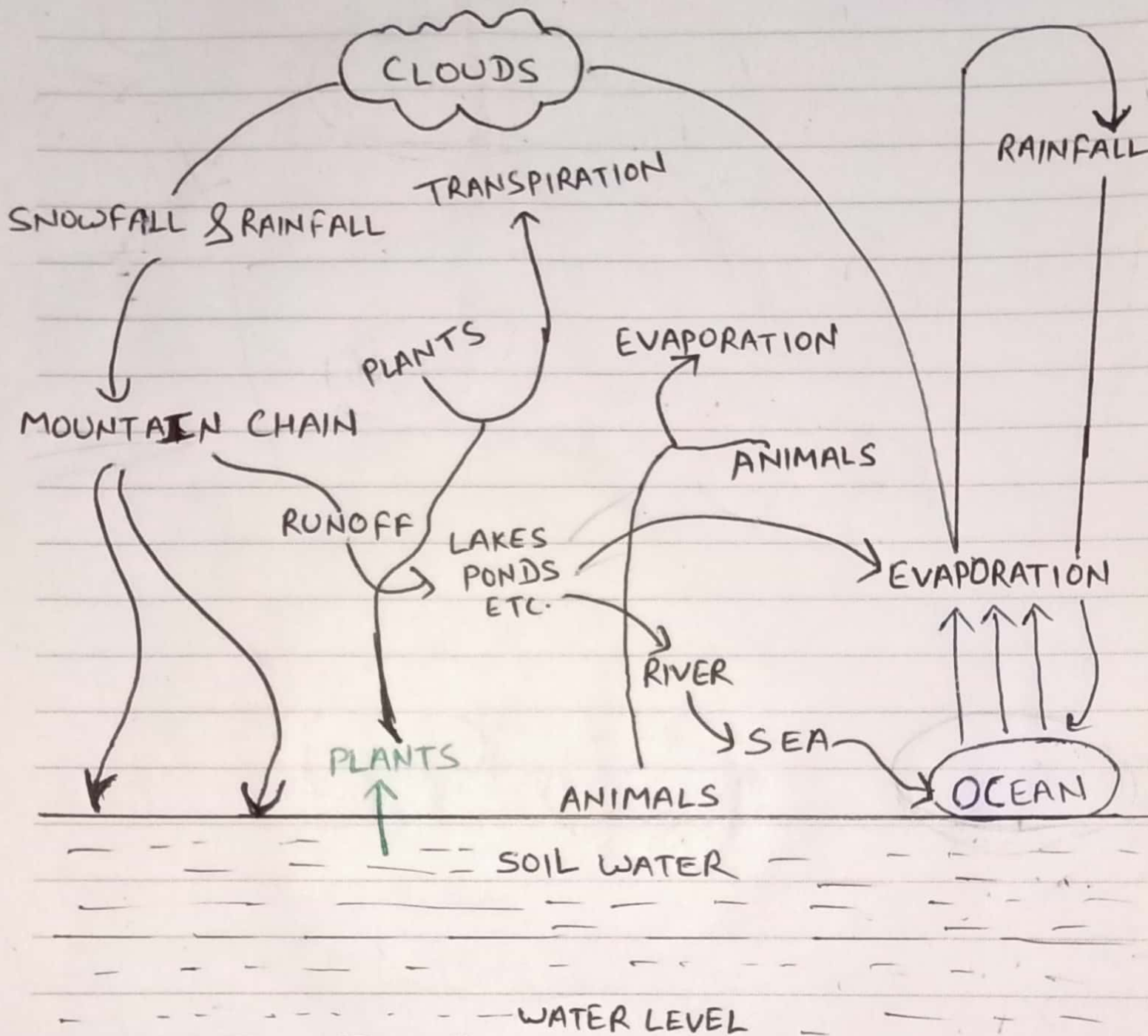
इसमें से प्रत्येक जलस्रोत, सूर्य की गर्मी से लगातार जल वाष्पित होता रहता है।

वायुमण्डलों में यह वादलों के रूप में लुप्त हो जाता है और अंततः वर्षा, ओलों अथवा बर्फ (Snowfall) के रूप में पृथ्वी की सतह, ice पर वापस आ जाता है।

इस प्रकार से पृथ्वी पर गिरने वाला जल धाराओं तथा नदियों में गिरता है और यह पुनः वापस बहकर समुद्र में उनी रूप में चला जाता है। वर्षा का जल, वर्षा के समय पृथ्वी के गहरे परतों में चला जाता है।

इस जल का एक बड़ा भाग घरेलू तथा औद्योगिक कार्यों के रूप में मनुष्य इसका प्रयोग करता है, जिसके बाद वह समुद्रों में बहकर अथवा वायुमंडल में मिलकर पुनः जलचक्र में शामिल हो जाता है। जल का कुछ भाग मृदा में रुक जाता है। यह जल (केशिका जल) पौधों की जड़ों द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है और वाष्पोत्सर्जन

की क्रिया के द्वारा वायुमंडल में लौट जाता है।
वे जानवर जो इन पादपों के खोते हैं उनके शरीर
में इस पादप जल का कुछ भाग चला जाता
है। जानवर इस जल को मूत्र त्याग अथवा वाष्पन
की क्रिया द्वारा वायुमंडल में वापस लौटा देते हैं।



चित्र:- जल चक्र (Water cycle)